व्यवस्था तथा गाँव-पंचायतों में व्यापक परिवर्तन होने लगे। वैज्ञानिक शिक्षा में होने वाली वृद्धि, नई मनोवृत्तियाँ, कुप्रथाओं का विरोध तथा औपचारिक सामाजिक सम्बन्ध भी इसी दशा का परिणाम हैं। इस प्रकार संस्कृति का प्रसार सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कारक है।

5. धार्मिक आचार (Religious Ethic)—मैक्स वेबर ने धार्मिक आचारों को एक प्रमुख सांस्कृतिक कारक मानते हुए उन्हीं के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की विवेचना की। धर्म तथा सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए वेबर ने जो सिद्धान्त प्रस्तुत किया, उसी को हम उनका 'धर्म का सिद्धान्त' कहते हैं। यह सिद्धान्त वेबर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'द प्रोटेस्टेण्ट इथिक एण्ड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म'** (The Protestant Ethic and the Spirit of Capitalism) में प्रस्तुत किया। वेबर ने विभिन्न समाजों की धार्मिक विशेषताओं का अध्ययन करके यह निष्कर्ष दिया कि लोगों के आर्थिक व्यवहार उनके धार्मिक आचारों अथवा धार्मिक विशेषताओं से ही प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, प्रोटेस्टेण्ट धर्म के आचार लोगों को यह विश्वास दिलाते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को कठिन परिश्रम करना आवश्यक है, परिश्रम को बोझ समझना ईश्वर का अपमान करना है, सिद्धान्तपूर्ण ढंग से सम्पत्ति का संचय करना बुरा नहीं है, मद्यपान से व्यक्ति की कार्यकुशलता कम हो जाती है, व्यक्तियों को कम-से-कम छुट्टियाँ लेनी चाहिए, वैराग्य की तुलना में कर्तव्यों का पालन करना अधिक आवश्यक है, आदि। यह सभी विश्वास ऐसे हैं जो एक पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था को विकसित करने में सहायक हुए। कैथोलिक धर्म की विशेषताएँ प्रोटेस्टेण्ट धर्म से भिन्न हैं। यही कारण है कि जिन देशों में प्रोटेस्टेण्ट धर्म का विकास हुआ, वहाँ पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था बहुत अधिक विकसित हो गयी। इसके विपरीत, कैथोलिक धर्म को मानने वाले देशों में पूँजीवाद का अधिक विकास नहीं हो सका। वेबर के विचारों से स्पष्ट होता है कि धर्म एक प्रमुख सांस्कृतिक कारक है तथा समाज की दूसरी विशेषताओं के साथ आर्थिक विशेषताओं को प्रभावित करने में भी धर्म की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वेबर के विचारों का मूल्यांकन यदि हम अपने समाज की दशाओं के सन्दर्भ में करें तो सामाजिक परिवर्तन में सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव स्पष्ट हो जाता है। आज हम मध्यकालीन धर्म के उस सड़े-गले रूप को नहीं मानते जो जातियों की उत्पत्ति को अलौकिक सन्दर्भ में स्पष्ट करता था तथा जिसने समाज में अनेक असमानताकारी, अमानवीय और विद्वेषपूर्ण व्यवहारों को प्रोत्साहन दिया। आज हमारे धर्म का सम्बन्ध मानवतावाद, समानता और बन्धुत्व से है। इसी के फलस्वरूप निम्न जातियों तथा स्त्रियों की स्थिति में व्यापक परिवर्तन हुए तथा धर्म के संरक्षण में रहने वाली सामाजिक कुप्रथाओं और कर्मकाण्डों का अन्त होने लगा।

6. नवाचार (Innovations)—बार्नेट (G. H. Barnet) ने अपनी पुस्तक **'नवाचार : सांस्कृतिक परिवर्तन का आधार'** (Innovation : The Basis of Cultural Change) में यह स्पष्ट किया कि नवाचार एक प्रमुख सांस्कृतिक कारक है तथा इसी के आधार पर सभी प्रमुख सामाजिक परिवर्तनों को समझा जा सकता है। **बार्नेट** के शब्दों में, "वे सभी नये आविष्कार तथा खोजें जो सांस्कृतिक परिवर्तन उत्पन्न करती हैं, उन्हें नवाचार कहा जाता है।" उन्होंने आगे लिखा कि "नवाचार का अर्थ किसी भी ऐसे नये विचार, व्यवहार अथवा वस्तु से है जो प्रचलित स्वरूप से भिन्न होती है।" स्पष्ट है कि नवाचार का तात्पर्य कार्य करने, विचार करने अथवा व्यवहार करने के किसी भी उस नये ढंग से है जिसे प्रोत्साहन मिलने से व्यक्तियों की जीवन-विधि और सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन होने लगता है। जब कभी भी समाज में नयी प्रौद्योगिकी का विकास होता है; नये-नये उपकरणों के द्वारा कार्य किया जाने लगता है, नये विचार और विश्वास हमारे व्यवहारों को प्रभावित करने लगते हैं; तब नवाचार के रूप में यह हमारे जीवन पर एक प्रमुख सांस्कृतिक कारक के प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। आज नवाचारों के कारण सामाजिक क्षेत्र में व्यवहार के अनेक नये ढंग विकसित हो गये। नये विश्वासों ने समाज सुधार आन्दोलन को बहुत तेज कर दिया। कृषि की नयी प्रविधियों के उपयोग से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आमूल परिवर्तन हो गया। परिवार नियोजन के नये साधनों से परिवारों की संरचना पर व्यापक प्रभाव पड़ा। सच तो यह है कि आदिम युग से लेकर आज तक नवाचारों में होने वाली वृद्धि की सहायता से ही सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझा जा सकता है। नवाचार हमारे विचारों और मनोवृत्तियों को ही नहीं बदलते बल्कि अतीत की सामाजिक संरचना और नियमों में भी परिवर्तन लाने की प्रेरणा देते हैं।

Scanned with CamScanner

7. सांस्कृतिक संघर्ष (Cultural Conflicts)—सांस्कृतिक संघर्ष वह दशा है जिसके अन्तर्गत एक-दूसरे से भिन्न संस्कृतियों वाले दो अथवा अधिक समूहों के बीच संघर्ष होने लगता है। ऐसा संघर्ष साधारणतया तब होता है जब एक विशेष संस्कृति वाले समूह के बीच किसी दूसरी संस्कृति के लोग आकर रहने लगते हैं। अपनी भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के कारण दोनों समूह एक-दूसरे पर अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं को लादने का प्रयत्न करते हैं जिसके फलस्वरूप सांस्कृतिक संघर्ष की समस्या उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिए, भारतीय समाज में संयुक्त परिवार, शिक्षा तथा धार्मिक विश्वासों से सम्बन्धित परम्परागत मान्यताएँ एक लम्बे समय तक प्रभावपूर्ण बनी रहीं लेकिन जब अँग्रेजों ने यहाँ एकाकी परिवार, अँग्रेजी शिक्षा तथा आधुनिक व्यवहारों से सम्बन्धित संस्कृति का प्रचार करना आरम्भ किया, तब इन दोनों संस्कृतियों के बीच काफी लम्बे समय तक संघर्ष की दशा बनी रही। समाज में जब भी सांस्कृतिक संघर्ष की दशा पैदा होती है, तब बहुत-से लोग अपने सामाजिक मूल्यों को अनुपयोगी समझने लगते हैं। इसके फलस्वरूप व्यक्तियों के व्यवहारों पर प्रथाओं तथा सामाजिक आदर्श-नियमों का नियन्त्रण कमजोर पड़ने लगता है। बहुत-से व्यक्ति मनमाने व्यवहारों को प्रोत्साहन देकर अपराधी व्यवहार करने लगते हैं। इस प्रकार सांस्कृतिक संघर्ष की दशा नई समस्याओं को जन्म देकर सामाजिक परिवर्तन में वृद्धि करती है।

8. वैचारिक परिवर्तन (Ideological Change)—कॉम्ट, वेबर, मार्क्स, दुर्खीम, सॉरोकिन तथा कार्ल मानहीम जैसे सभी विद्वान् यह मानते हैं कि विचार एक ऐसा सांस्कृतिक कारक है जिसकी सामाजिक परिवर्तन लाने में विशेष भूमिका होती है। विचार का सम्बन्ध सामाजिक मूल्यों तथा एक समय विशेष की आवश्यकताओं से होता है। यही कारण है कि समय की माँग के अनुसार विचारों में भी परिवर्तन होता रहता है। यही परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। उदाहरण के लिए, एक लम्बे समय तक यह माना जाता रहा है कि राजा ईश्वर का प्रतिनिधि होता है तथा उसके आदेशों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। राजतन्त्र की जगह जब नये राष्ट्रों का उदय हुआ तो लोगों के विचारों में परिवर्तन हो जाने से राज्य के अधिकारों में वृद्धि होने लगी, अन्धविश्वासों का प्रभाव कम होने लगा, निम्न और मध्यम वर्गों के अधिकारों में वृद्धि हुई, सामाजिक व्यवस्था को समताकारी बनाने के प्रयत्न होने लगे तथा प्रत्येक व्यवहार में तर्क और विवेक को महत्व दिया जाने लगा। महान् जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने किसी समाज की आर्थिक व्यवस्था को भी विचारों अथवा दूसरे शब्दों में, धार्मिक विश्वासों के आधार पर ही स्पष्ट किया है। यदि हम भारत का उदाहरण लें तो स्पष्ट होता है कि यहाँ स्मृतिकाल से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक हमारे विचार पूरी तरह धार्मिक मान्यताओं, जन्म पर आधारित स्तरीकरण तथा जातिगत विभेदों पर आधारित थे। उन्नीसवीं शताब्दी में जब सबसे पहले सुधारवादी विचारों का जन्म हुआ तो सती प्रथा, बाल-विवाह, विधवा विवाह पर नियन्त्रण तथा धार्मिक अन्धविश्वासों की आलोचना की जाने लगी। स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा के प्रभाव से जब प्रगतिशील विचारों का प्रभाव बढ़ने लगा तो स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार दिये जाने लगे; विवाह तथा सम्पत्ति सम्बन्धी नियमों में व्यापक परिवर्तन हो गये; पिछड़ी जातियों तथा दुर्बल वर्गों को समानता के अधिकार प्राप्त हुए; कर्मकाण्डों की तीखी आलोचना की जाने लगी तथा राज्य द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग को विकास के समान अवसर मिलने लगे। वास्तविकता यह है कि सामाजिक परिवर्तन लाने में विचारों का प्रभाव गुणात्मक होता है। विचारों में होने वाला परिवर्तन समय की आवश्यकताओं के अनुसार होता है। यही कारण है कि लोग नये विचारों को जल्दी ही ग्रहण करने लगते हैं। **लेपियर** ने लिखा है कि हम जैसा सोचते हैं, उसी के अनुसार व्यवहार करते हैं।[1] इस प्रकार विचारों में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की दशा उत्पन्न करता है।

सामाजिक परिवर्तन के उपर्युक्त सभी सांस्कृतिक कारक हमारी सामाजिक संरचना, सामाजिक संगठन, आर्थिक व्यवस्था, राजनीतिक संगठन तथा स्वयं प्रौद्योगिकी को एक बड़ी सीमा तक प्रभावित करते हैं। यदि हम सामाजिक ढाँचे और सामाजिक संगठन पर इन कारकों के प्रभाव को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृति की भिन्नता के अनुसार ही किसी समाज में संयुक्त परिवारों की प्रधानता

1 Lapiere, *Social Change*, p. 294.

Scanned with CamScanner

होती है तो कुछ में एकाकी परिवारों को अधिक महत्व मिलता है। विभिन्न संस्कृतियों में विवाह का रूप भी एक-दूसरे से भिन्न होता है। कुछ संस्कृतियों में स्त्री एवं पुरुषों की सामाजिक प्रस्थिति में समानता होती है, जबकि संस्कृति के परम्परागत रूप के कारण ही मुस्लिम स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार नहीं मिल सके। हमारे समाज में धर्म के अध्यात्मवादी रूप के कारण भौतिक प्रगति को अधिक महत्व नहीं दिया जाता, जबकि पश्चिमी संस्कृति भौतिक प्रगति को ही व्यक्ति की सबसे बड़ी सफलता के रूप में देखती है। संस्कृति ही इस बात का निर्धारण करती है कि न्याय-व्यवस्था किस प्रकार की हो, नागरिकों को कौन-से अधिकार दिये जायें तथा कानूनों की प्रकृति किस तरह की हो। वास्तविकता तो यह है कि समाज के कानूनों को प्रभावित करने में वहाँ की प्रथाओं तथा परम्पराओं का योगदान सबसे अधिक होता है। वेबलिन तथा मार्क्स के विचारों से भिन्न सॉरोकिन तथा मैकाइवर का यहाँ तक विचार है कि प्रौद्योगिकी में होने वाला परिवर्तन भी सांस्कृतिक कारकों का ही परिणाम होता है। सांस्कृतिक दशाएँ यह दिशा-निर्देश देती हैं कि प्रौद्योगिकी को किस प्रकार विकसित किया जाये तथा विभिन्न प्रकार के उपकरणों, मशीनों एवं प्रौद्योगिक ज्ञान का उपयोग किन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाये। स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन में सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव की अवहेलना नहीं की जा सकती।

प्रश्न

Scanned with CamScanner